स्नातक उपाधि कार्यक्रम
सत्रांत परीक्षा
फरवरी, 2021

ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी
बी.एच.डी.ई.-101 / ई.एच.डी.-1 : हिन्दी गद्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **प्रथम** प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष में से **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं ***तीन*** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) दोनों दोस्तों ने कमर से तलवार निकाल लीं । नवाबी जमाना था; सभी तलवार, पेशक़ब्ज़, कतार वगैरह बाँधते थे । दोनों विलासी थे, कायर न थे । उनमें राजनीतिक भावों का अध:पतन हो गया था — बादशाह के लिए, बादशाहत के लिए क्यों मरें; पर व्यक्तिगत वीरता का अभाव न था । दोनों ने पैंतरे बदले, तलवारें चमकीं; छपाछप की आवाजें आयीं दोनों ज़ख्म खाकर गिरे और दोनों ने वहीं तड़प-तड़प कर जानें दे दीं । अपने बादशाह के लिए जिनकी आँखों में एक बूँद आँसू न निकला, उन दोनों प्राणियों ने शतरंज के वज़ीर की रक्षा में प्राण दे दिए ।

(ख) क्या सचमुच मनुष्य ईश्वर का खिलौना है ? यही मानव-जीवन का महत्त्व है ? वह केवल बालकों का घरौंदा है, जिसके बनने का न कोई हेतु है न बिगड़ने का ? फिर बालकों को भी तो घरौंदों से, अपनी काग़ज़ की नावों से, अपनी लकड़ी के घोड़ों से ममता होती है । अच्छे खिलौने को वह जान के पीछे छिपा कर रखते हैं । अगर ईश्वर बालक ही है तो विचित्र बालक है । किन्तु बुद्धि तो ईश्वर का यह रूप स्वीकार नहीं करती ।

(ग) अकेले यहाँ भय लगता है क्या ? बैठिए, सुनिए । मेरे पिता ने उपहार-स्वरूप कन्यादान दिया था । किंतु गुप्त-सम्राट क्या अपनी पत्नी शत्रु को उपहार में देंगे ? (घुटने के बल बैठकर) देखिए, मेरी ओर देखिए । मेरा स्त्रीत्व क्या इतने का भी अधिकारी नहीं कि अपने को स्वामी समझने वाला पुरुष उसके लिए प्राणों का पण लगा सके ।

(घ) हमारी परम्परा महिमामयी, उत्तराधिकार विपुल और संस्कार उज्ज्वल हैं । हमारे अनजान में भी ये बातें हमें एक खास दिशा में सोचने की प्रेरणा देती हैं । यह जरूर है कि परिस्थितियाँ बदल गयी हैं । उपकरण नए हो गए हैं और उलझनों की मात्रा भी बहुत बढ़ गयी है, पर मूल समस्याएँ बहुत अधिक नहीं बदली हैं । भारतीय चित्र जो आज भी 'अनधीनता' के रूप में न सोचकर 'स्वाधीनता' के रूप में सोचता है, वह हमारे दीर्घकालिक संस्कारों का फल है । वह 'स्व' के बंधन को आसानी से नहीं छोड़ सकता ।

(ङ) कह नहीं सकती, कब और कैसे मुझे उन बालकों को कुछ सिखाने का मुझे ध्यान आया; पर जब बिना कार्यकारिणी के निर्वाचन के, बिना पदाधिकारियों के चुनाव के, बिना भवन के, बिना चन्दे की अपील के और सारांश यह है कि बिना किसी चिर-परिचित समारोह के, मेरे विद्यार्थी पीपल के पेड़ की घनी छाया में मेरे चारों ओर एकत्र हो गये, तब मैं बड़ी कठिनाई से गुरु के उपयुक्त गम्भीरता का भार वहन कर सकी ।

2. हिन्दी के आरम्भिक गद्य लेखन का परिचय लिखिए । *16*

3. भारतेन्दुयुगीन हिन्दी गद्य के विकास पर प्रकाश डालिए । *16*

4. 'उसने कहा था' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए । *16*

5. " 'निर्मला' नारी-जीवन का कारुणिक दृश्य प्रस्तुत करता है" — इस कथन की समीक्षा कीजिए । *16*

6. एकांकी के रूप में 'रीढ़ की हड्डी' की समीक्षा कीजिए । *16*

7. नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'ध्रुवस्वामिनी' की विवेचना कीजिए । *16*

8. 'पगडंडियों का ज़माना' की मुख्य समस्या पर प्रकाश डालिए । *16*

9. निबंध के प्रमुख तत्त्वों का परिचय दीजिए । *16*

10. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) 'सबसे सस्ता गोश्त' की कथावस्तु

(ख) नाटक और एकांकी में अंतर

(ग) 'शरणदाता' की भाषा

(घ) 'घीसा' का चरित्र